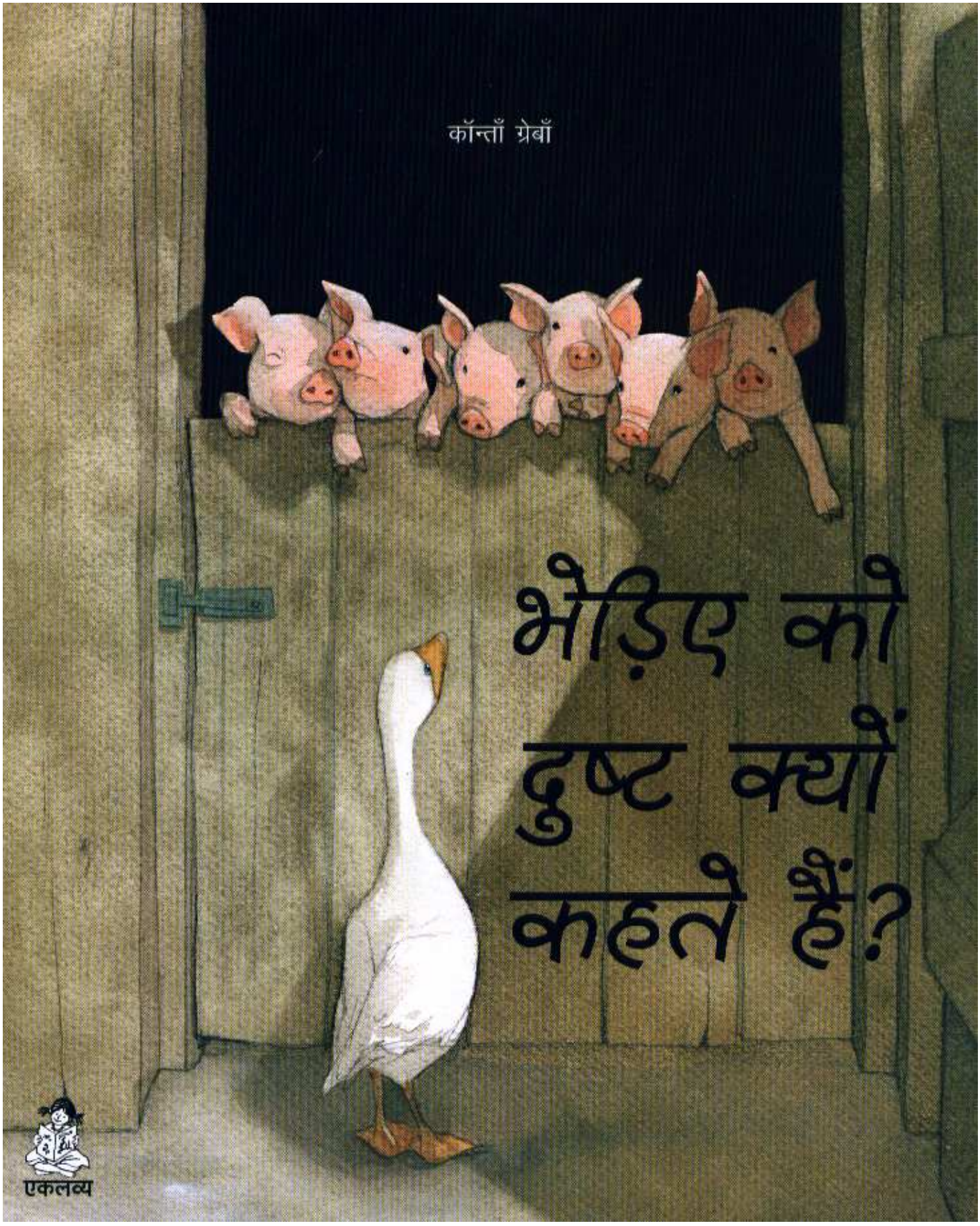

कॉन्ताँ ग्रेबाँ

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?

एकलव्य

टिटे मेल्युसिन के लिए,
- कॉन्ताँ ग्रेबाँ

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?
BHEDIYE KO DUSHT KYUN KEHTE HAIN?
कहानी व चित्रः कॉन्ताँ ग्रेबाँ
अँग्रेज़ी से अनुवादः सुमित त्रिपाठी

Originally published as
'Mais pourquoi dit-on que les loups sont méchants?'
by Mijade Publications
Text and illustrations © 2008 Quentin Gréban
हिन्दी अनुवाद © 2011 एकलव्य

मार्च 2011 / 5000 प्रतियाँ
कागज़ः 100 gsm मेपलिथो और 250 gsm सफायर बोर्ड (कवर)
पराग इनिशिएटिव, सर रतन टाटा ट्रस्ट, मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
मूल्यः ₹ 60.00

प्रकाशकः ज्योत्स्ना प्रकाशन
430-31, शनिवार पेठ, पुणे - 411030
ज्योत्स्ना प्रकाशन द्वारा केवल एकलव्य के लिए प्रकाशित
सम्पर्कः एकलव्य
ई-10, शंकर नगर बी.डी.ए. कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोनः (0755) 2550976, 2671017
फैक्सः (0755) 2551108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

मुद्रकः युनिक ऑफसेट, पुणे - 411041

ISBN: 978-81-7925-272-7

कॉन्ताँ ग्रेबाँ

भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं?

एकलव्य

भेड़िया तो कुछ भी खा लेता है... छोटा नरम मेमना, तीन गोल-मटोल नन्हे सूअर या फिर लालमलाल राइडिंगहुड। सब कहते हैं कि भेड़िए दुष्ट होते हैं। आओ तुम्हें बताता हूँ कि ऐसा क्यों कहते हैं...

बहुत दिनों कि बात है, एक भेड़िया था जो अपने नन्हे-मुन्नों के साथ रहता था। अभी वह दुष्ट खूँखार भेड़िया नहीं बना था, बस एक आम भेड़िया था।

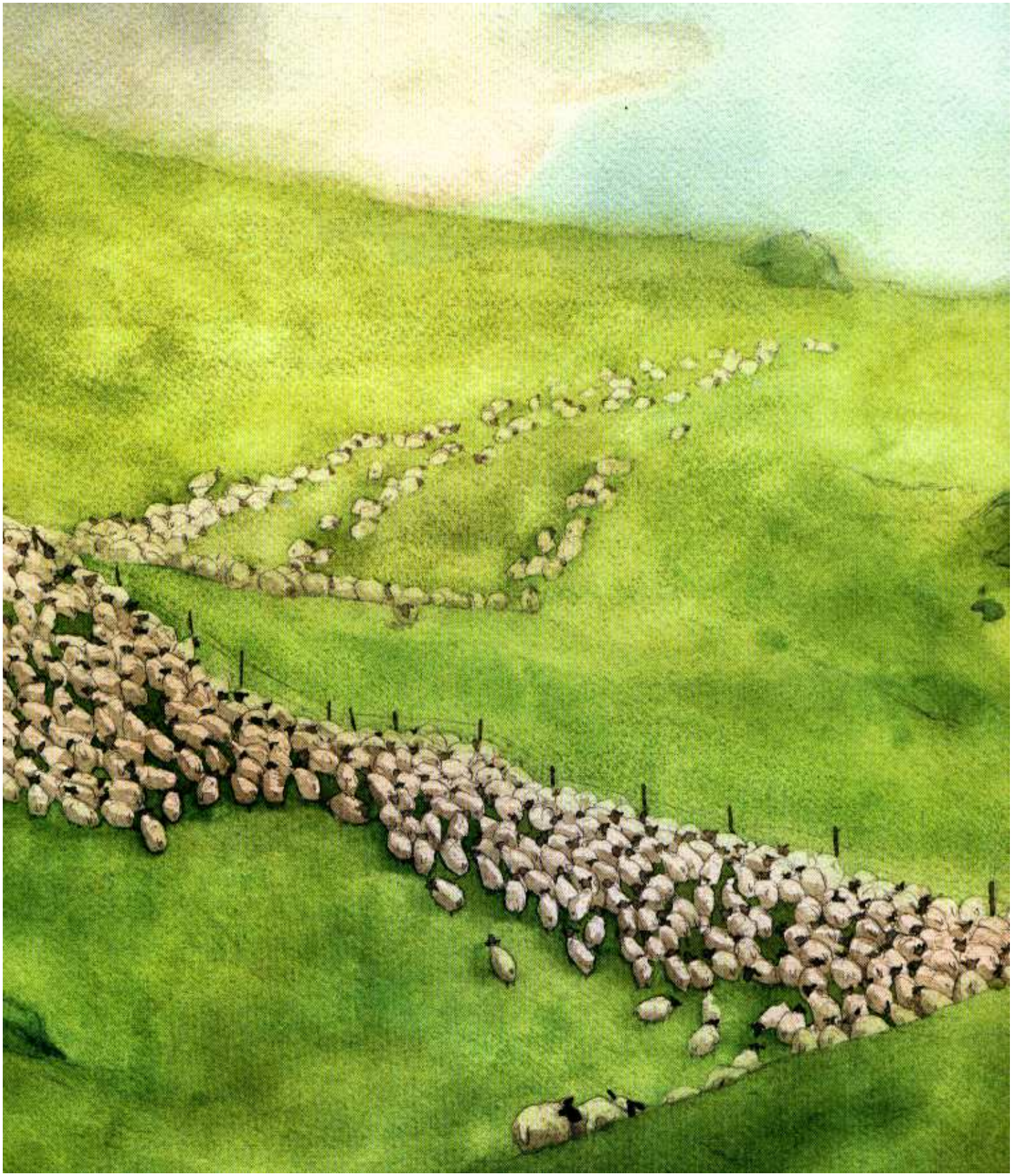

एक दिन वह एक नन्हे मेमने से मिला जो अपने झुण्ड से बिछड़ गया था।
भेड़िए ने एक ज़ोरदार मुस्कान से मेमने को सलाम किया।
ऐसी मुस्कान कि उसके सारे चमाचम सफेद दाँत दिखने लगे।

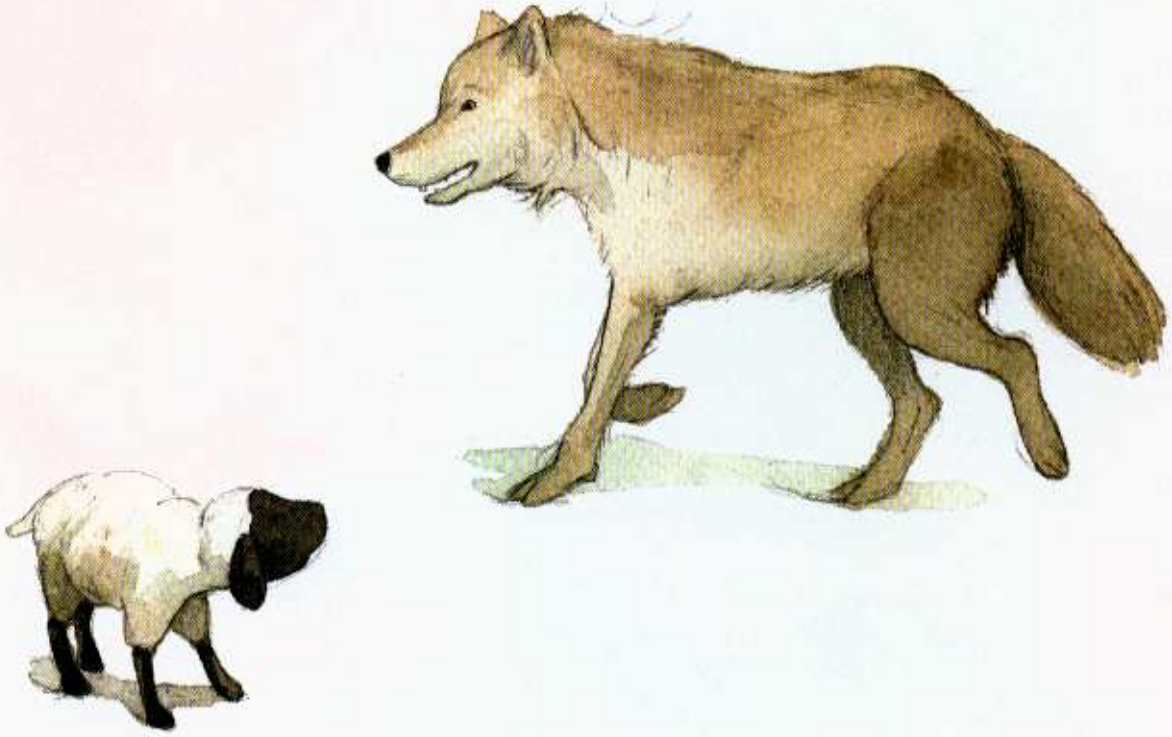

मेमना उन पैने दाँतों से ऐसा घबराया कि वह छुपने के लिए अपने मित्र
सूअरों के पास भागा।

सूअरों को उसने अपना रोमांचक किस्सा सुनायाः

"एक दुष्ट भेड़िए ने मुझ पर हमला किया। वह अपने नुकीले दाँतों से मुझे काट खाना चाहता था।"

मेमने कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं।

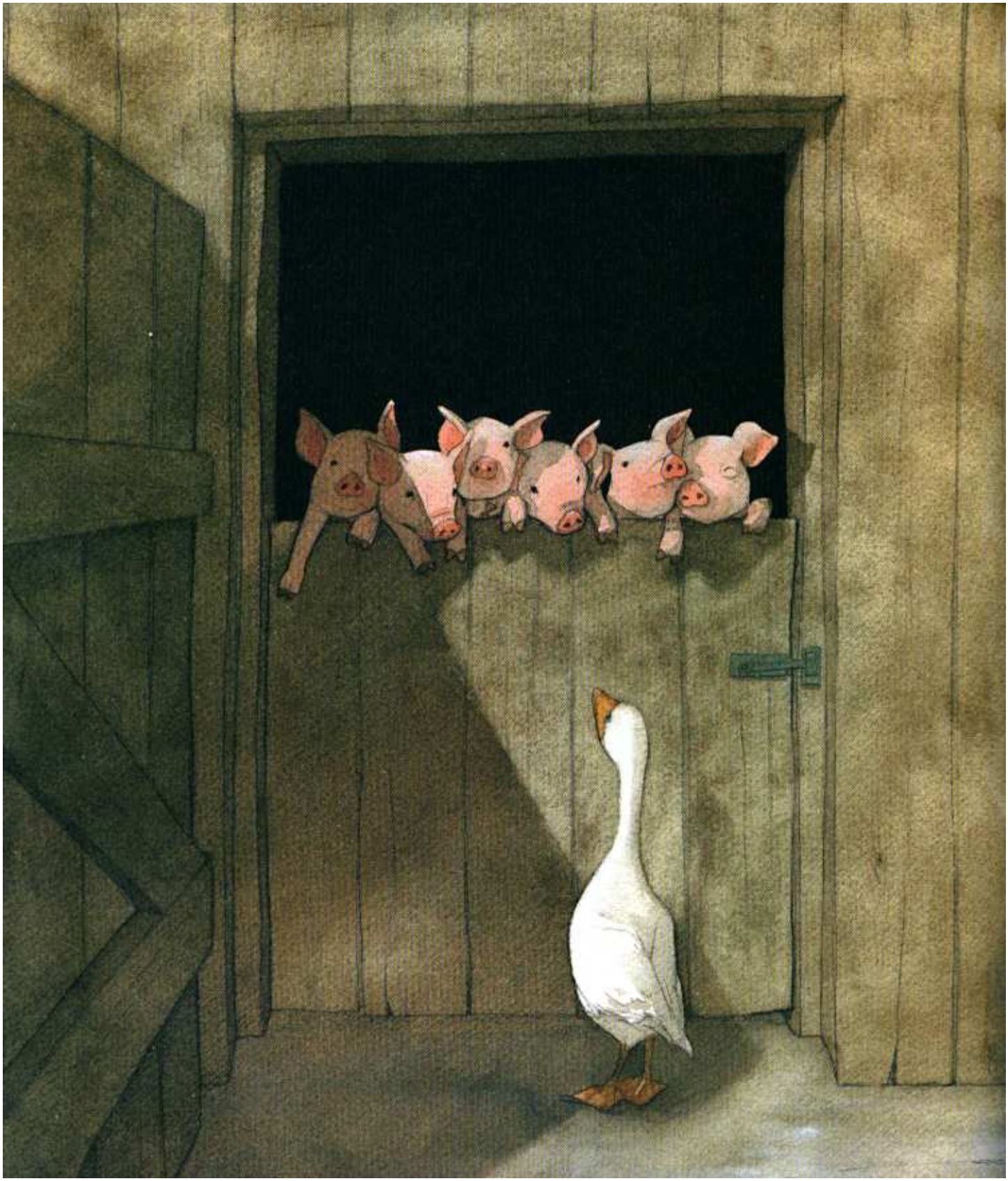

सूअर बेहद नाराज़ हुए।
एक बिचारे छोटे-से मेमने पर हमला, वह भी बिना बात के! कितने शर्म की बात है!
यह दुखद समाचार वे अपने पड़ोसी हंस के साथ कैसे न बाँटते:

"एक बड़े-से भेड़िए ने एक नन्हे मेमने पर हमला किया,
वह अपने चक्कू जैसे बड़े-बड़े दाँतों से उसे खा जाना चाहता था।"
सूअर कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं।

हंस को बड़ा गुस्सा आया।
एक छुटके निहत्थे मेमने पर हमला! कितनी बदनामी की बात है!
यह भयंकर समाचार वह गधे को ज़रूर बताएगीः

"एक विशालकाय भेड़िया, तलवार जैसे बड़े-बड़े दाँतों वाला, मेमनों के एक पूरे परिवार को खा गया। वह उन्हें साबुत ही निगल गया।"
हंस कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं।

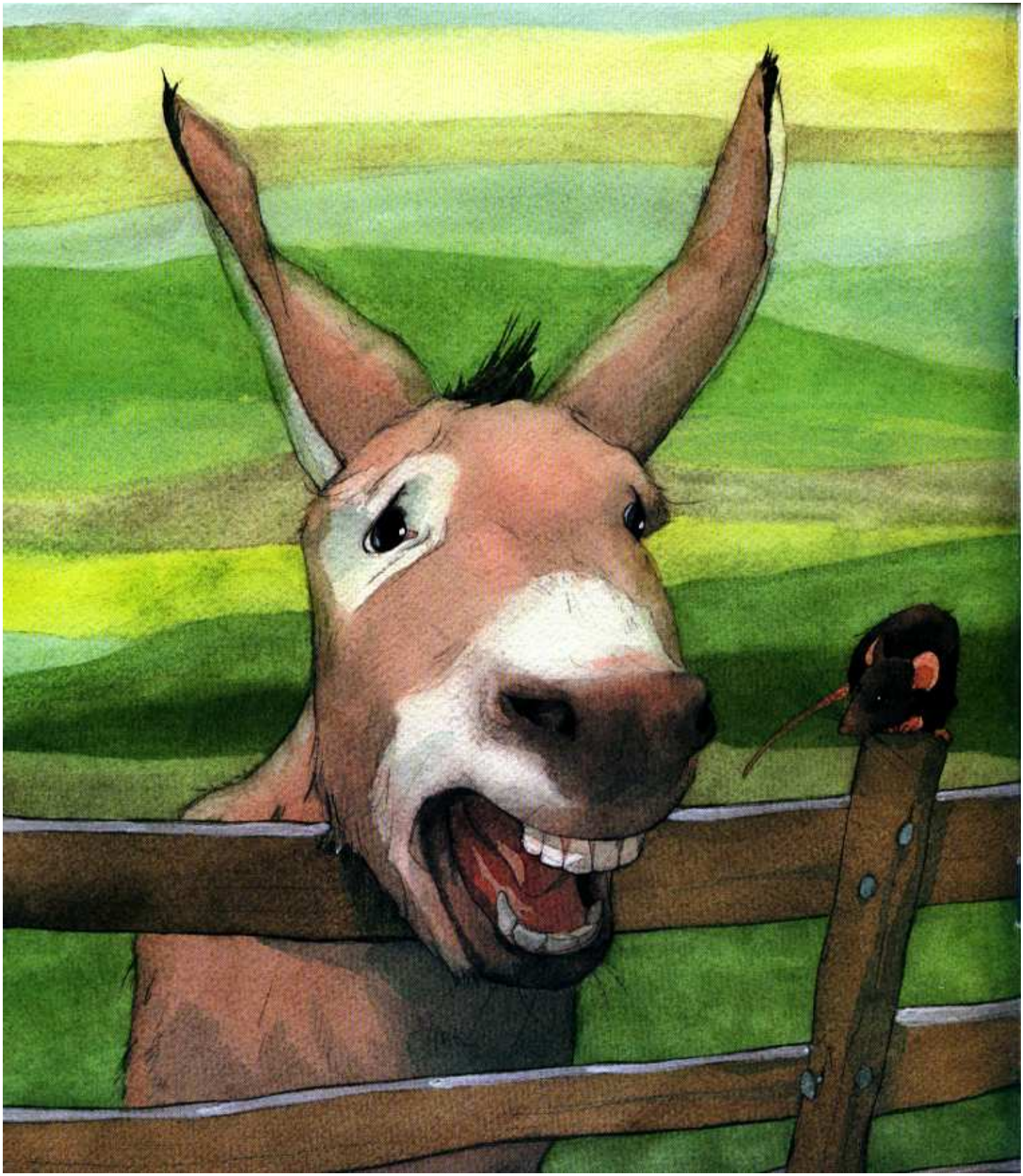

गधे के दुख का ठिकाना न रहा।
इस तरह बिना बात मेमनों के झुण्ड पर हमला!
कैसी भयानक बात है!
वह बिना समय गँवाए यह समाचार चूहे को देने पहुँचाः

"राक्षसों जैसे खूँखार भेड़ियों के एक दस्ते ने मेमनों के एक पूरे झुण्ड पर हमला किया है। उनके दाँत भालों जैसे बड़े-बड़े थे! एक भी मेमना नहीं बचा!"

गधे कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं।

चूहा दहलकर रह गया।
एक बार में मेमनों का पूरा झुण्ड!
यह सहा नहीं जा सकता!
वह पक्का करता है कि यह घातक समाचार
मुर्गों तक पहुँच जाए:

"भेड़िए छुट्टे घूम रहे हैं।
दुनिया के सब जानवर खतरे में हैं।"

सब तरफ अफरा-तफरी मच गई।
जब मुर्गे छुपने की जगह ढूँढ रहे थे,
उसी टाइम चूज़ों ने खबर को और फैला दिया।

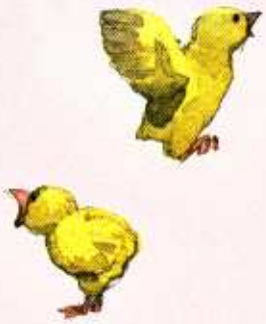

तो इस तरह यह अफवाह फैलती गई...

...और फैलती गई!

जब तक कि सारे जानवर दुष्ट खूँखार भेड़िए की करतूतों को बखानने नहीं लगेः

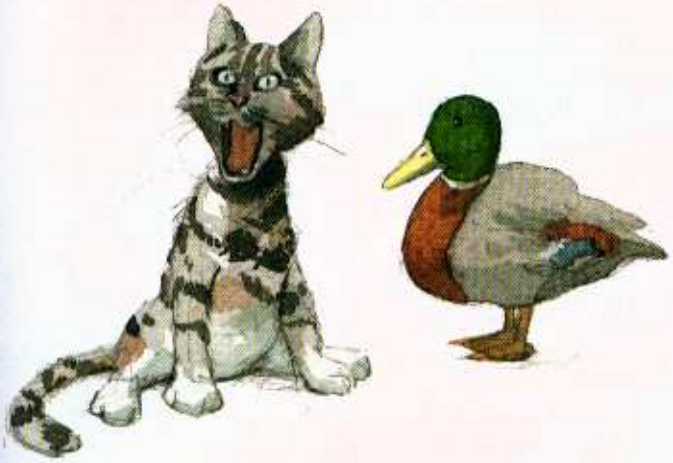

"वह बदसूरत है," किसी जानवर ने कहा।

"वह दुष्ट है," दूसरा बोला।

"वह तो पूरा राक्षस है!" तीसरे ने कहा।

हर कोई आतंकित है।

"जान बचाकर भागो!!!

एक खूँखार दरिन्दा है। जो भी जानवर उसके सामने पड़ता है वह उस पर हमला कर देता है। वह बहोओत बड़ा है, बदसूरत है और बेहद भूखा।"

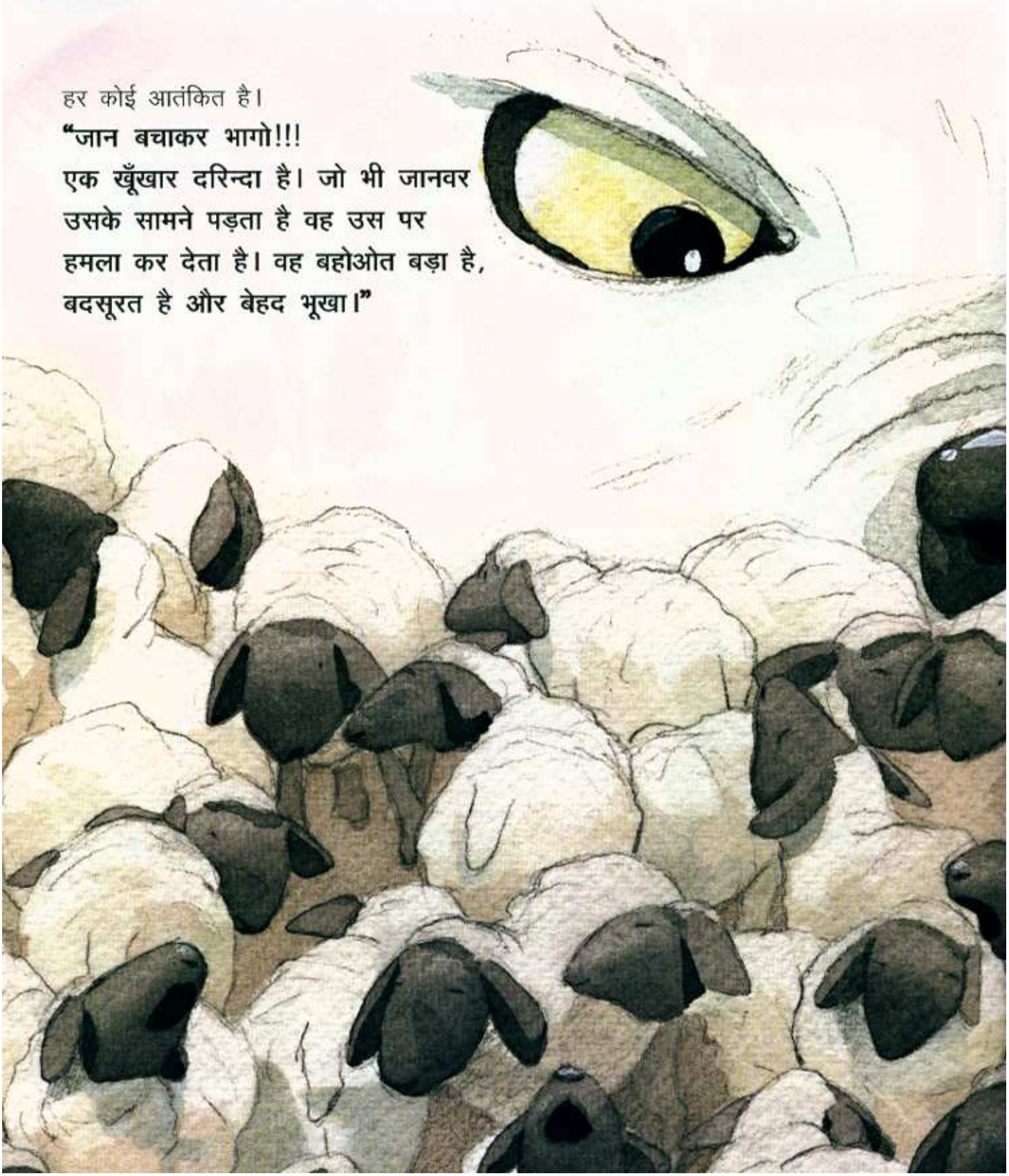

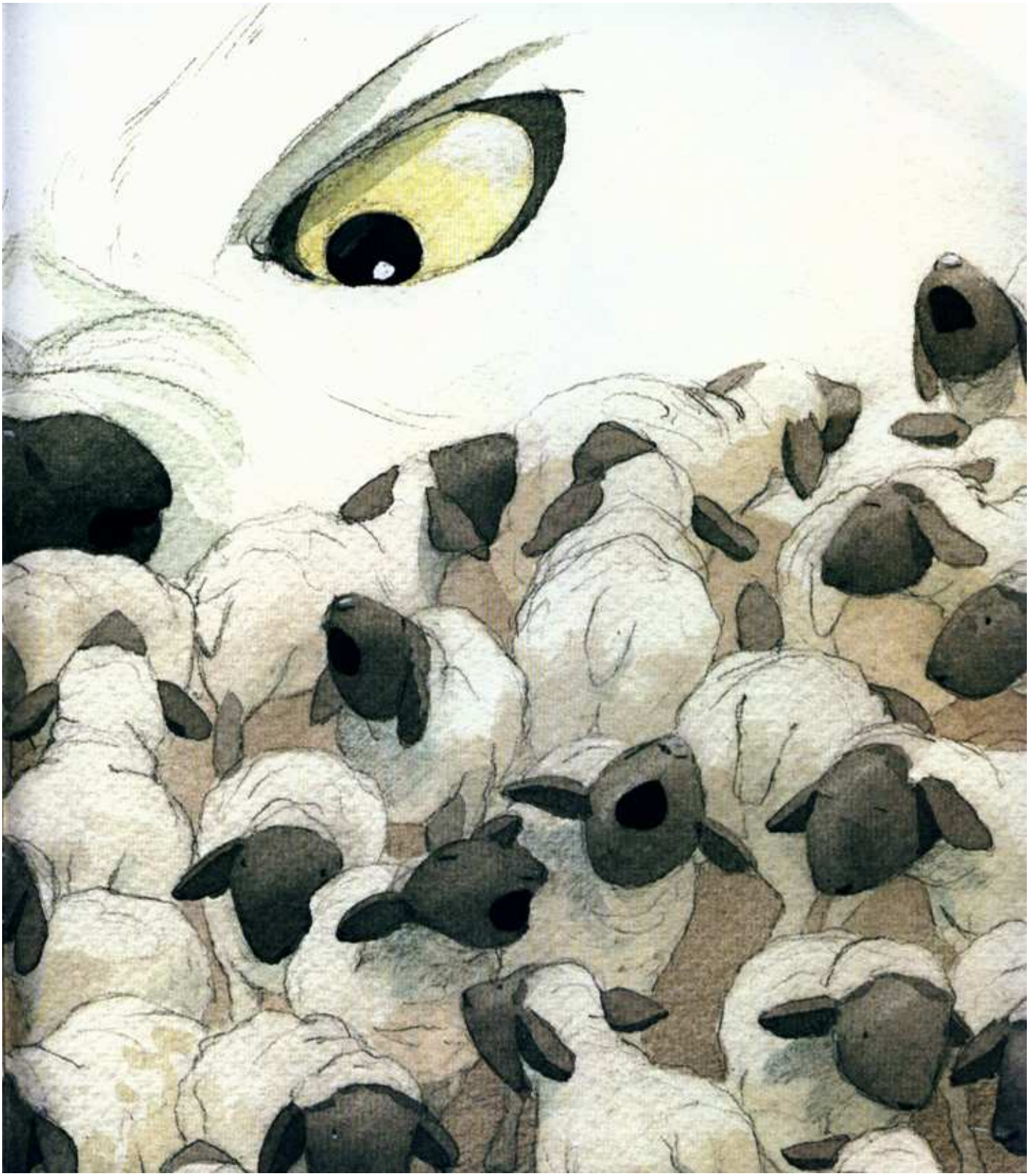

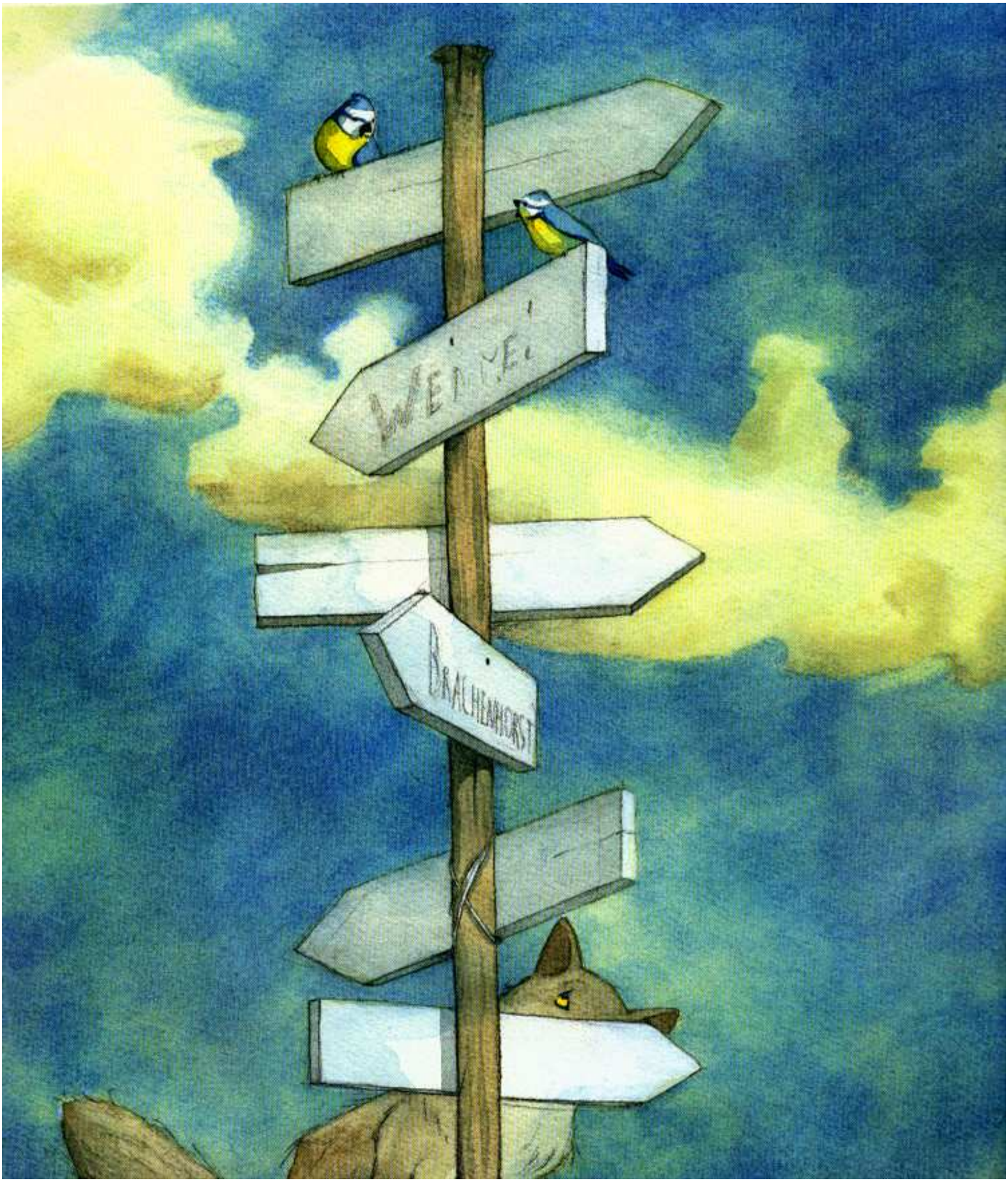

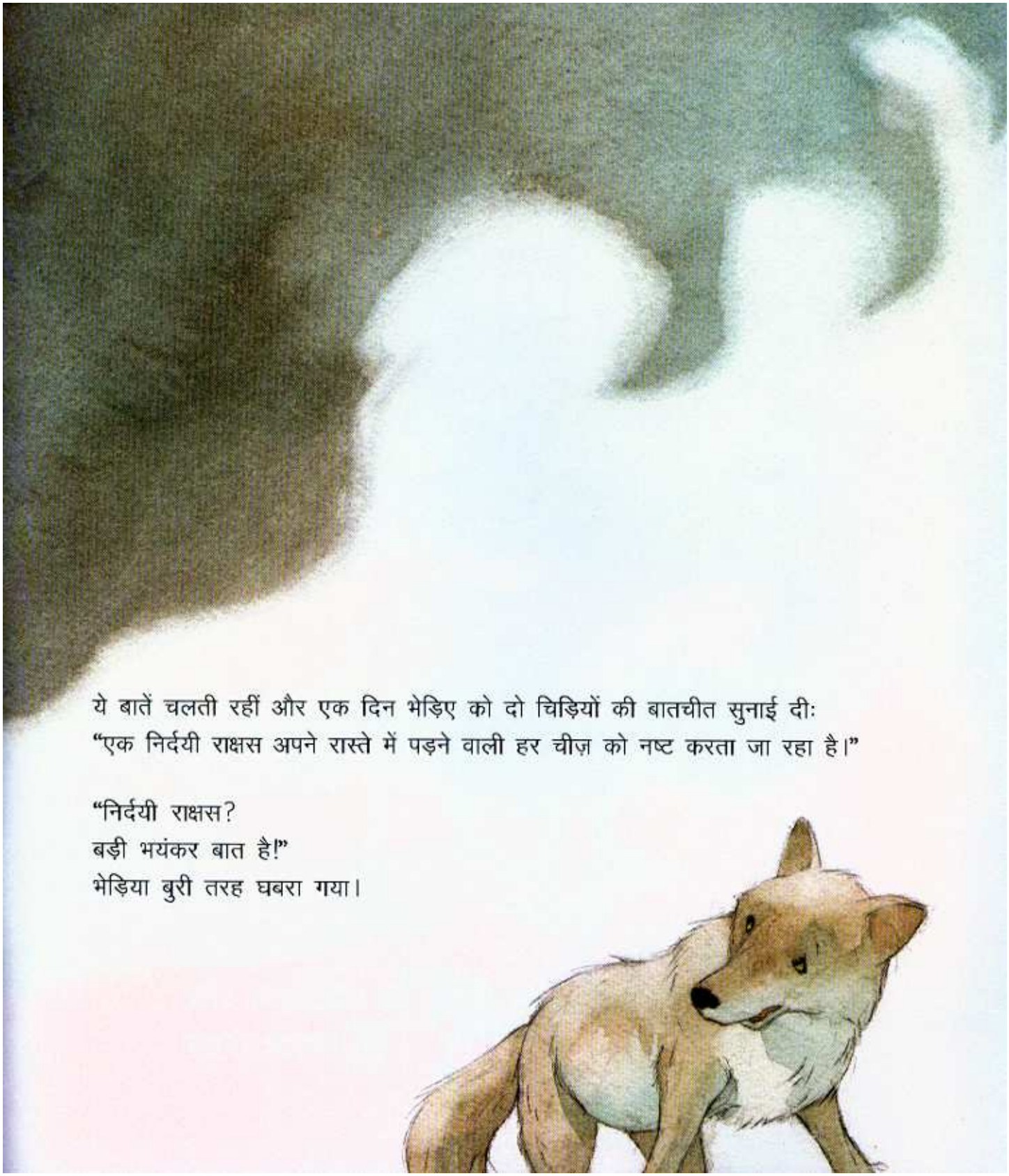

ये बातें चलती रहीं और एक दिन भेड़िए को दो चिड़ियों की बातचीत सुनाई दीः
"एक निर्दयी राक्षस अपने रास्ते में पड़ने वाली हर चीज़ को नष्ट करता जा रहा है।"

"निर्दयी राक्षस?
बड़ी भयंकर बात है!"
भेड़िया बुरी तरह घबरा गया।

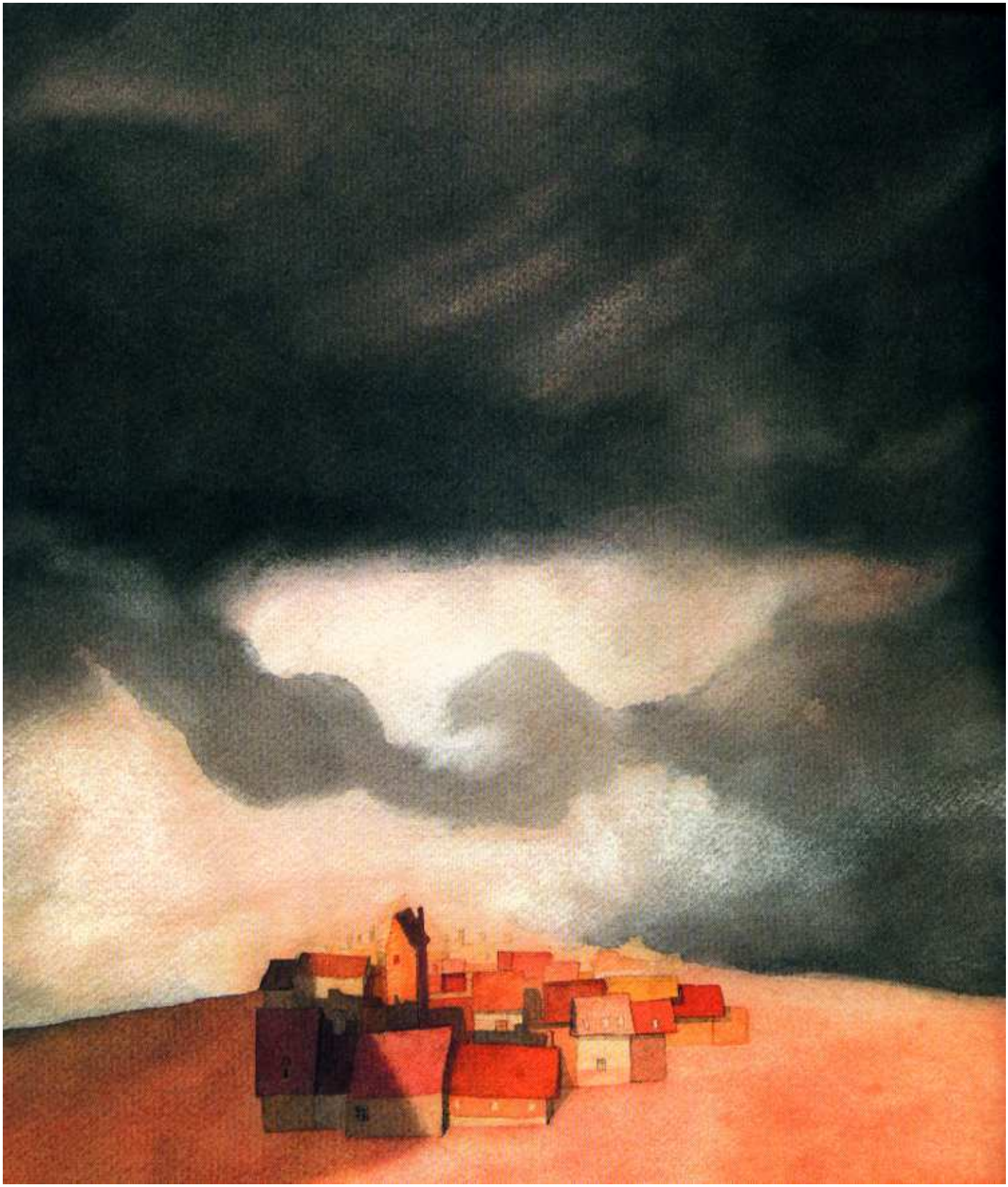

अचानक आसमान में अँधेरा छा गया
और तूफान मँडराने लगा।
बादल ऐसे ज़ोर से गरजे
कि भेड़िए को यकीन हो गयाः
राक्षस आ पहुँचा है।

और आज रात वह भेड़िए को
खाना चाहता है।

इससे पहले किसी ने एक भेड़िए को इतनी तेज़ और इतनी दूर तक भागते नहीं देखा था।
वह फिर इस इलाके में कभी नहीं दिखा।

भेड़िए कुछ बढ़ा-चढ़ाकर तो बताते ही हैं।

9 788179 252727

एकलव्य

मूल्य: ₹ 60.00

A0145H

पराग SRTT के वित्तीय सहयोग से विकसित